ओम शान्ति 13-9-09 मधुबन

प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश– गुल्जार दादी

(विशेष रशिया निवासी ब्राह्मण परिवार प्रति)

आप सबके दिल के स्नेह का रिस्पान्ड देने के लिए बाबा ने हमें वतन में बुलाया। तो सदा के माफिक जैसे हम जाते हैं तो बाबा दूर से ही खड़ा हुआ मिलता है। दूर से ही अपने मधुर मुस्कान और नयनों की रुहानियत से मिलन मनाते हैं। बाबा ने दृष्टि देते हुए बहुत रुहानियत की राहत देते हुए, दूर से ही मिलन मनाया और हम भी उसी रूप का अनुभव करते हुए बाबा के सम्मुख पहुंच गये।

बाबा ने कहा आओ दिलतख्तनशीन बच्ची आओ आज क्या समाचार लाई हो? मैंने कहा बाबा आज रशिया की सेवाओं के 20 वर्ष पूरे हुए हैं इसलिए इन्हों की सेरीमनी हो रही है। तो अचानक ही मैं वहाँ से आई हूँ। बाबा ने कहा देखो बच्ची, रशिया में बाबा के बच्चे छिपे हुए थे। बच्चे तो बाप को पहचान नहीं सकते, बाप ही बच्चों को पहचान सकते हैं। तो यह जो बच्चे छिपे हुए थे, बाबा ने उन्हों को घर-घर से, कोने-कोने से पहचानके, छांटके निकाला है। बच्चों को पूछना, तो हरेक बच्चे को यह नशा रहता है, कि मुझे बाबा ने खुद आके ढूंढा है? हमारे एरिया में इतने रहे पड़े हैं लेकिन बाबा की नजर हम पर पड़ी, मैंने भी बाबा को पहचाना, हम बाबा के बने और बाबा को अपना बनाया। यह नशा है कि बाबा की नजर मेरे ऊपर ही पड़ी? बाबा को मैं पसन्द आ गई/ आ गया। यह नशा है ना! रशिया में कितने लोग हैं। आप कहाँ-कहाँ छिपे हुए थे लेकिन कमाल है बाबा की जो बाबा ने आपको अपना बना लिया! बाबा ने कहा, रशिया से बाबा की भी दिल का प्यार है क्यों? क्योंकि बाबा जानते हैं कि भविष्य में भी रशिया का भाग, हमारे सतयुग में राजधानी के समय भी कुछ मिक्स होगा। इसलिए बाबा को इन्हों का भविष्य भी याद है, जानते हैं, इसलिए रशिया वालों से प्यार है। आपको पता है कि रशिया का कुछ हिस्सा सतयुग में पिकनिक का स्थान बनेगा? इस धरनी को आपने ऐसा प्यारा और शुभ बनाया है जो सतयुग में भी हमारे काम आयेगी। तो दिल में क्या आता है, वाह! बाबा वाह!, वाह! मेरा भाग्य!

इसके बाद बाबा ने कहा अच्छा आज इनकी खास सेरीमनी है, तो सेरीमनी के दिन खास घूमते-फिरते हैं तो आज इन सब बच्चों को वतन में बुलाता हूँ। तो बाबा ने आप सबको वहाँ वतन में इमर्ज किया। आप सभी दो वी (V) के रूप में खड़े हुए थे। आप अभी बुद्धि से वहाँ वतन में पहुंचे? दोनों वी के बीच में बाबा बैठे थे, आप सामने थे, बाबा दृष्टि दे रहे थे। फिर बाबा ने कहा, अच्छा क्या देखेंगे अभी? अपना भविष्य रूप देखेंगे? दृष्टि देने के बाद बाबा ने कहा अच्छा चलो अभी ले चलता हूँ। एक हॉल था जिसमें बैठने की सीट लगी हुई थी, सीट सिंहासन के माफिक थी। सफेद रंग के सिंहासन थे। बाबा ने कहा सभी अपने सिंहासन पर बैठ जाओ। संगम का ताज तो सभी को है ही। तो सिंहासन पर बैठने से लगा कि सभी ताजधारी बैठे हैं। उसके बाद बाबा ने सामने बैठ के सभी को दृष्टि दी। जैसे ही बाबा की दृष्टि पड़ी तो हरेक के तीन रूप प्रकट हो गये। इसी सीट पर पहले ब्राह्मण, फिर फरिश्ता रूप फिर देवता रूप, एक-एक के तीन रूप प्रकट हो गये। बाबा ने कहा जैसे बाबा के तीन रूप हैं, बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरु भी है। ऐसे आपके भी तीन रूप हैं, इन्हीं तीनों रूप में से किसी न किसी रूप की स्मृति में सदा रहो। तो आप सब किस स्मृति में रहते हैं? बाबा ने कहा ब्राह्मण तो हो ही लेकिन जब तक फरिश्ता नहीं बनेंगे तब तक देवता पद नहीं पायेंगे। इसलिए चलते-फिरते फरिश्तेपन की ड्रेस पहन लो, तो फरिश्ता हूँ फिर तो देवता जाके बनूंगा इसलिए फरिश्तापन की स्मृति सदा रखो। तो फरिश्तारूप याद रहता है? ऐसे बाबा ने तीन रूपों का अनुभव कराया फिर बाबा आगे-आगे जा रहा था हम सभी बाबा के पीछे-पीछे चल रहे थे। सभी के मस्तक पर बिन्दी-बिन्दी आत्मा के रूप में चमकती हुई दिखाई दे रही थी, ऐसे दृष्टि देते हुए बाबा ने आप सबको मर्ज कर दिया। उसके बाद हम मिले। बाबा ने कहा, बापदादा की तरफ से पदम-पदम पदमगुणा इन्हों को बीस वर्ष की बधाई देना। फिर हम भी वतन से यहाँ पहुंच गये। ओम् शान्ति।